ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-1* Issue-12* January-2017
Innovation The Research Concept

जनपद चन्दौली : एक पुरातात्विक अध्ययन

सारांश

ऐतिहासिक अध्ययन, पुरातात्विक साक्ष्यों के परीक्षणोपरान्त प्राप्त विवरण से विभिन्न पक्षों–सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विरासत का समन्वित प्रतिरुप प्रदर्शित करता है, साथ ही स्रोतों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध विभिन्न ऐतिहासिक बिन्दुओं पर मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है। वस्तुतः किसी भी क्षेत्र–विशेष का इतिहास वहाँ के साहित्यिक,पुरातात्विक एवं अन्य स्रोतों की उपलब्धता, अतीत की विभिन्न ऐतिहासिक गतिविधियों का समेकित प्रभाव, वर्तमान की समकालीन चुनौतियाँ एवं भविष्य की अथाह सम्भावनाओं को समाहित किये होता है। चन्दौली जनपद का इतिहास वहाँ से प्राप्त साहित्यिक, पुरातात्विक स्रोतों पर आधारित है। सामान्य रुप से क्षेत्र का ऐतिहासिक परिचय सामाजिक मूल्यों, मान्यताऐं, रुढ़ियां, परम्पराएँ एवं आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। चन्दौली जनपद के पुरातात्विक विवरण में इतिहास की दृष्टि रखने वाले सुधी विचारकों को प्रभावित करने वाले तत्व विद्यमान हैं।

मुख्य शब्द : जनपद, नदी, पुरातात्विक अध्ययन, उपकरण, समाधियाँ, मृदभांड, लौहकालीन, संस्कृति।

जितेन्द्र सिंह नौलखा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
के0एन0 पी0 जी0 कॉलेज,
ज्ञानपुर, भदोही (उ0प्र0)

कमलेश
शोध छात्र,
प्राचीन इतिहास विभाग,
के0 एन0 पी0 जी0 कॉलेज,
ज्ञानपुर, भदोही (उ0प्र0)

प्रस्तावना

जनपद चन्दौली भगवान शिव की आदि नगरी काशी के उत्तर–पूर्व की दिशा में चरणस्थली के रूप में स्थित है। यह जनपद स्वतंत्र अस्तित्व में आने से पूर्व वाराणसी (काशी) जनपद का ही एक भाग था। प्रशासनिक प्रयोजन के निहितार्थ 20 मई 1997 ई0 को वाराणसी जनपद से अलग कर जनपद चन्दौली का गठन राज्य सरकार (उ0प्र0) द्वारा किया गया है।[1] चन्दौली के पश्चिम वाराणसी, उत्तर में गाजीपुर, दक्षिण–पूर्व में मिर्जापुर, दक्षिण में सोनभद्र जनपद स्थित है। चन्दौली जनपद की पूर्वी सीमा बिहार राज्य से मिलती है। यह जनपद अक्षांशीय एवं देशान्तरीय दृष्टि से $24^0$56 से $25^0$35 उत्तरी अक्षांश और $81^0$14 से $84^0$24 पूर्व देशान्तर के मध्य अवस्थित है।[2] इसकी औसत ऊँचाई समुद्र तल से 230 फीट है। पूर्व की दिशा में प्रवाहित होने वाली कर्मनाशा नदी और पश्चिम दिशा में स्थित पश्चिमी वाहिनी गंगा नदी इस जनपद की जलीय सीमा का निर्धारण करती है। गंगा नदी चन्दौली जनपद को वाराणसी, गाजीपुर जनपद से, कर्मनाशा नदी बिहार राज्य से, गड़ई नदी मिर्जापुर जनपद से पृथक करती है। गंगा, कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा और गड़ई नदियाँ जनपद चन्दौली की भौगोलिक और आर्थिक स्थिति का निर्धारण करती हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से चन्दौली जनपद दक्षिण में विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित है एवं गंगा–कर्मनाशा नदियों के बीच में एक विशाल एवं उपजाऊ मैदानी भू–भाग के रूप में विकसित है। चन्दौली जनपद उ0प्र0 राज्य के पूर्वी द्वार के रूप में विख्यात है और इस जनपद को उ0प्र0 राज्य में 'चावल का कटोरा' की संज्ञा दी गई है।

किसी भी स्थल का इतिहास तभी से प्रारम्भ माना जाता है जब से उस स्थान पर मानव के बसने की प्रक्रिया आरम्भ होती है। किसी भी स्थान के इतिहास की व्युत्पत्ति को पूर्णरूपेण उद्घाटित करने के लिए इतिहास, भूगोल, पुरातत्व, कला, मानवशास्त्र तथा जीव–विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। जनपद चन्दौली से सम्बन्धित पुरातात्विक स्रोतों, अभिलेखों, स्मारकों एवं मुद्राओं इत्यादि का विश्लेषण करके यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह जनपद प्रागैतिहासिक सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र बिन्दु था। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि जनपद चन्दौली की सकलडीहा तहसील में रामगढ़ के समीप बाणगंगा के तट पर स्थित बैराठ के पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं आंशिक उत्खनन में पुरातत्वविद् कालाईल महोदय[3] को प्रस्तरयुगीन उपकरण मृदभाण्ड मूर्तियाँ एवं अन्य अवशेष मिले हैं। बैराठ, गंगा के दक्षिण में सैदपुर से दक्षिण–पूर्व में वाराणसी उत्तर–पूर्व में लगभग 16 मील तथा गाजीपुर के दक्षिण–पश्चिम में 12 मील दूरी पर स्थित है।[4] बैराठ के खण्डहर

बाणगंगा के दक्षिण पूर्व में वर्तुलाकार स्थित हैं। बैराठ के किले युक्त अवशेष बाणगंगा के पूर्वी किनारे पर स्थित हैं। उत्तर–दक्षिण में इसकी लम्बाई 1350 फीट एवं पूर्व–पश्चिम में 900 फीट है।

कालाईल महोदय को इस स्थान से आंशिक उत्खनन से ढलुए आहत सिक्के प्राप्त हुए थे। उपरोक्त साक्ष्यों एवं प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन कालीन काशी राज्य का जो इतिहास है, वही चन्दौली व निकटवर्ती स्थानीय भू–भागों का भी है।[5] जनपद के चकिया शहाबगंज एवं नौगढ़ विकासखण्डों में भी पाषाणकालीन सामग्री बहुतायत मात्रा में मिली है। जनपद की पर्वत श्रृंखलाओं में अनेकों पाषाण समाधि–संस्कृति परिलक्षित हुई है। समाधियों के कई प्रकार हैं, जैसे– फणाशिला, छत्रशिला, गुफासमाधि, अंत्येष्टिकलश, शवमंजूषा, मेनहिर समाधि, संगोरा समाधि आदि। इस विन्ध्यक्षेत्र में संगोरा समाधि उत्खनन से मिली है। कब्र का गढ्ढा मिट्टी से भरा है, ऊपर प्रस्तर पिण्डों का ढुह है। बर्तन, लौह उपकरण आदि मिले हैं। आदि मानव के चर्बित भक्षित अस्थि खण्ड मिले हैं। ककोरिया पुरास्थल चन्द्रप्रभा नदी के दाहिने तट पर हथिनिया पहाड़ियों की छत्रछाया में वाराणसी से 25 मील दक्षिण–पूर्व में योगेश्वरनाथ के मन्दिर से पास स्थित है। यह स्थल सभी ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जो चार सौ से पाँच सौ फीट ऊँची है। इस क्षेत्र में वर्तमान में बारह समाधियों का उत्खनन किया गया। चार में हड्डियाँ ही हड्डियाँ थीं। आठ संगोरा समाधि तथा तीन सिस्ट समाधियां थीं।[6] विन्ध्य की उत्तरी ढाल का सम्पूर्ण क्षेत्र इसमें सम्मिलित है। सतना–बांदा जिले में मंदाकिनी – पयस्विनी नदियों की घाटियों से कर्मनाशा की घाटी तक वृहत्पाषाण समाधि संस्कृति संकुल है। जनपद के चकिया तहसील में कर्मनाशा नदी के बांये किनारे पर मूसाखाड़ बाँध के समीप मलहर से प्राक्–लौहयुगीन अवशेष मिले हैं।[7] प्रकारान्तर में उ0प्र0 पुरातत्व विभाग द्वारा किये गए उत्खनन कार्यो से जो अवशेष मिले हैं, उनका विश्लेषण करके इस सभ्यता की काल अवधि लगभग 1900 ई0पू0 तक जाती है। यहाँ से कृष्णमार्जित एवं लाल मृदभाण्ड भी मिले हैं। इसी स्थान के समीप से 1600 ई0पू0 के लौह अवशेष मिले हैं।[8]

जनपद चन्दौली के विविध क्षेत्रों का पुरातात्विक विश्लेषण समय–समय पर विविध इतिहासकारों एवं पुरातत्ववेताओं द्वारा किया गया। क्षेत्र में उत्खनन का प्रारम्भिक कार्य सन् 1875–76 ई0 में एलेक्जेण्डर कनिघंम द्वारा किया गया।[9] प्रकारान्तर में सन् 1877–78 ई0 में कनिघंम के नेतृत्व में ही पाश्चात्य इतिहासकार एवं पुरातत्वविद् ए0सी0एल कार्लाइल महोदय ने जनपद के सकलडीहा तहसील में बैराठ एवं बाणगंगा के समीप प्रस्तरकालीन सभ्यता–संस्कृति के अवशेषों को खोज निकाला। इस स्थान से प्रस्तरकालीन उपकरण पंचमार्क सिक्के, बौध्दकालीन मूर्तियाँ, प्रस्तर आभूषण, ताँबेयुक्त मृद्भाण्ड एवं कृष्णमार्जित मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।

उद्देश्य

कार्लाइल महोदय द्वारा क्षेत्र में किये गए कार्यो के परिणामस्वरूप इतिहासकार तीव्र गति से क्षेत्र की तरफ आकर्षित हुए। सन् 1891 ई0 में फ्यूहरर महोदय ने कुछ अन्य पुरातात्विक इतिहास को खोज निकाला।[10] इन्होने प्रहलादपुर के प्रस्तर स्तम्भ को भी खोज निकाला। 19वीं शताब्दी के अन्त तक और 20वीं शताब्दी के छठवें दशक तक अर्थात 1960–61 के पश्चात पुरातात्विक अध्ययन को क्रमबध्दता, गतिशीलता एवं व्यापकता दी गयी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बनारस) एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इलाहाबाद) के संयुक्त प्रयासों से उत्खनन–सम्बन्धी कार्य किये गए। इनके सद्प्रयासों से प्राक्– ऐतिहासिक काल से पूर्व ऐतिहासिक काल की सभ्यता–संस्कृति वाले अनेक क्षेत्रों की खोज की गई, जिनमें हेतमपुर, प्रहलादपुर, हिंगुत्तरगढ़, ककोरिया, तकियापार प्रमुख हैं।[11] चकिया तहसील के चन्द्रप्रभा नदी के दाहिने किनारे पर विन्ध्य क्षेत्र में स्थित केन्द्रों से कीलों, बर्तन, ओपदार वस्तुओं के प्रमाण मिले हैं।[12] इसी तहसील में स्थित हथिनियाँ की पहाडी में स्थित "राजा बाबा का पहाड़"[13] से 60 सेमी0 के संचित क्षेत्र में 6 परतों वाली प्रागैतिहासिक सभ्यता के चिन्ह मिले हैं।[14] जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में किये गए उत्खनन कार्यो का विवरण निम्नवत् है–

बेन

यह गांव चकिया तहसील मुख्यालय से लगभग 10 किमी0 पूर्व में स्थित है। यहाँ पर एक 80X80X5 मी0 क्षेत्रफल वाला भू–भाग उत्खनन कार्यो का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ कृष्णमार्जित काले एवं धूसर मृदभाण्ड पाये गए हैं। इसी स्थान के समीप 13वीं – 14वीं शताब्दी का मंदिर भी पाया गया है।

भीषमपुर

चकिया तहसील मुख्यालय से लगभग 5 किमी0 पश्चिम में स्थित है। यह गाँव लौहयुगीन सभ्यता–संस्कृति का केन्द्र रहा है। इसका उत्खनन सन् 1962 में जी0आर0शर्मा के नेतृत्व में किया गया तथा यहाँ से 1.40 मी0 के संग्रह क्षेत्र से प्राचीन कालीन अवशेष मिले हैं।

देवदरी प्रपात– औरवाटांड

नौगढ़ विकासखण्ड में स्थित यह स्थल आदिम–सभ्यता एवं संस्कृति का प्रमुख स्थल है। इस स्थान से प्राकृतिक गुफा के आवास मिले हैं। गुफाओं की दीवारों पर चूना, पत्थर, चाक एवं कोयले इत्यादि से चित्रकारी भी की गयी है। यहाँ से प्रारम्भिक लौहकालीन उपकरण, बर्तन, स्विल्ड, बाऊल, परफोरेटेड एवं फुटेड बेसेल बहुतायत मात्रा में मिले हैं।[15]

गोड़टुटवा मोड़

सीताखोर पहाड

यह स्थल चकिया तहसील मुख्यालय से लगभग 13 किमी0 की दूरी पर चकिया नौगढ़ पर स्थित है। यहाँ से पूर्व–ऐतिहासिक काल के मृदभाण्ड अन्य उपकरण, तश्तरियाँ, पत्थरों के कलात्मक टुकड़े मिले हैं।[16]

नौगढ कोट

यह स्थल कनहर नाला एवं कर्मनाशा नदी के संगम स्थल पर स्थित है। जनपद के पुरातात्विक दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्रों में यह स्थल प्रमुख स्थान रखता है। यहाँ बड़े भूभाग में लौह कालीन कृष्णमार्जित, धूसर मृदभाण्ड बर्तनों के अवशेष, लौह उपकरण जैसे – कील, छेनी, बाणफलक, एन0वी0पी0 बेयर, वृहदमात्रा में पाये गए हैं।

वर्तमान में यहाँ एक विशाल किला भी स्थित है जिसे "नौगढ़ का किला" कहा जाता है। किले के प्रांगण में भी लौहकालीन अवशेष सरलता से उपलब्ध हैं।

निन्दौर

यह स्थल चकिया हांटा मार्ग पर तहसील मुख्यालय से लगभग 14 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ चार टीले आस–पास स्थित है। पुरातात्विक अवशेषों की दृष्टि से इन्हें काफी समृध्द माना गया है। इसका प्रथम विवरण इतिहासकार बुखनन ने दिया है। इस स्थल से भी प्राचीन अवशेष विशेषतया ओपदार बर्तन, औजार, उपकरण इत्यादि प्राप्त हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि यह स्थल 5वीं शताब्दी में गुप्त शासकों के शासनकाल में भी अत्यधिक विकसित अवस्था में था। यहाँ के टीले पी0एल0– 114 से जिसका क्षेत्रफल लगभग 750X750X20 मीटर है, से कुछ मूर्तियाँ भी मिली हैं।

प्रमुख स्थलों के अतिरिक्त उतरौत, पचवनियाँ परासीकलां, जसुरी, बिसौरी, सिरसी, तकियापार, रामपुर, सिकन्दरपुर जैसे अनेक पूर्व–ऐतिहासिक स्थल हैं, जिनके व्यापक उत्खनन एवं शोधों से तत्कालीन इतिहास और मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति पर व्यापक प्रकाश डाला जा सकता है। यहाँ के अवशेष अतरंजीखेड़ा (एटा), कोलडीहवा (इलाहाबाद), लालकिला (बुलन्दशहर), सोनपुर (गया) एवं पाण्डुराजाढ़ीबी (पश्चिमी बंगाल) के अवशेषों से अत्यधिक समानता रखते हैं। यहाँ के अवशेषों में ज्यामितीय आकार का पाषाणीय हथियार तथा अन्य अवशेषों से स्पष्ट होता है, कि यह सभ्यता धातुयुगीन थी। यहाँ से मौर्य, गुप्त, कुषाण व शुंग कालीन पुरातात्विक सामग्री भी प्राप्त हुई है। यहँ से उपरोक्त काल के काले एवं लाल मृदभाण्ड, उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्ड, हड्डियों से निर्मित वस्तुऐं एवं मनुष्य व पशुओं की मृण्मूर्तियाँ, मनके, तश्तरियाँ, आहत, रजत, सिक्के मिले हैं। उपरोक्त प्रकार के अवशेष चकिया, हिंगुत्तरगढ़, सैदूपुर, घुरहूपुर, बैराठ, सिरसी इत्यादि स्थलों से भी मिले है, जो यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं कि प्राचीनकाल में जनपद चन्दौली के अनेक भागों में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियाँ संचालित थीं।

निष्कर्ष

चन्दौली जिले के पुरातत्व को सीमावर्ती जनपद वाराणसी एवं मिर्जापुर की पुरातात्विक खोजों और अन्वेषणों के आलोक में समझना सरल है। चन्दौली के दक्षिण–पूर्व में स्थित मिर्जापुर जनपद प्रागैतिहासिक काल तक के ऐतिहासिक तत्वों को स्वयं में समेटे हुए है, जबकि पश्चिम में वाराणसी जनपद की प्राचीनता भी महाभारत युग तक जाती है। अतः उक्त दोनों पड़ौसी जिलों की ऐतिहासिक विरासत को समेटे हुऐ जनपद चन्दौली स्वयं में भी लगभग इसी प्रकार की स्थिति परिलक्षित करता है। हालांकि पुरातात्विक दृष्टि से अभी निकट भविष्य में चन्दौली जनपद में अपार सम्भावनाऐं दृष्टिगोचर हैं जिससे कि इस जनपद को विश्व के पुरातात्विक पटल पर स्थापित किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जनरल ऑफ हिस्टोरिकल सोसाइटी, भाग–12 खण्ड 2, पृष्ठ 27
2. *"प्राग्धारा"* ,पुरातत्व विभाग उ0प्र0, अंक–10, 1999–2000, पृष्ठ 135
3. *ए0 एस0 ए0,* 22 पृष्ठ 108
4. *काशी का इतिहास* : डॉ0 मोतीचन्द्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 9
5. *काशी का इतिहास* : डॉ0 मोतीचन्द्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 10
6. *पुरातत्व अनुशीलन,* भाग 2, पृष्ठ 44–45, डॉ0 राधाकान्त वर्मा, डॉ0 नीरा वर्मा परमज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद
7. राकेश तिवारी : इन क्वेस्ट ऑफ आयरन–एज साइट्स इन कर्मनाशा वैली, *"प्राग्धारा"*, अंक 8, 1999–2000, पृष्ठ 57–673
8. एक्सक्वेन्स एट मलहर ,*"प्राग्धारा"*, अंक 10, 1999–2000, पृष्ठ 67–68
9. *ए रिपोर्ट ऑफ टूर्स इन गैंगेटिक प्रोविंसेज फ्राम बँदायू टू बिहार,,* अंक 11, कोलकाता
10. *दी मौन्युमेन्टल एण्टीक्यूटीज एण्ड इंसक्रिप्शन इन दी नार्थ– वेस्ट प्रोविन्सेज एण्ड अवध,* फ्यूहर ए0, 1891, इलाहाबाद
11. *"प्राग्धारा"*, पुरातत्व विभाग उ0प्र0 राज्य, अंक 10, पृष्ठ 138
12. *दी बिगनिंग ऑफ एग्रीकल्चर* : जी0 आर0 शर्मा, इलाहाबाद, 1980, पृष्ठ 8
13. *इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू,* 1961–62, पृष्ठ 53
14. *सम आस्पेक्ट्स ऑफ इण्डियन आर्कियोलॉजी:* मिश्रा वी0डी, इलाहाबाद, 1977, पृष्ठ 77
15. *"प्राग्धारा"*, पुरातत्व विभाग उ0प्र0, अंक 10, पृष्ठ 141
16. *इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू* ,1961–62, पृष्ठ 69